" कार्ल खण्डाला' का कथन है। कि कलात्मक उपलब्धियों की दृष्टि से संसार में सबसे उत्कृष्ट दक्षिण भारतीय कांस्य मूर्तिकला अधिकांश शैव धर्म से सम्बंधित रही और यही कारण है कि चोल साम्राज्य में शैव मूर्तियां बहुतायत में बनी।"

इस प्रकार नायक शासक के अन्तर्गत मन्दिरो तथा मण्डपों आदि की दीवारों पर स्तम्भों के अतिरिक्त तोड़ो तथा छतों में शिव संबन्धी विविध प्रसंगों अन्य हिन्दू देवी-देवता औ गरुड सिंह अश्व हस्ती व्याल गजासिंह तथा शार्दुलो आदि की छोटी या वास्तविक आकारों में आकृतियां उत्कीर्ण की गयी शासको उनके परिवार उनकी पत्नियों, मन्त्रियों आदि की मूर्ति उत्कीर्ण की गयी। पीतल तांबे तथा कांसे की ठोस प्रतिमायें मधूच्छिष्ट विधि से ढाली गयी।

अधिकांश देवी-देवताओ को अनेक भुजाएं दिखायी गयी है। शरीर की भंगिमा तथा मुद्राओ की भी अतिरंजित प्रयोग हुआ है पर इनके शरीर कारण मूर्तियों में कही भी कुरुपता या शैली गत दुर्बलता नही आने पायी।

डा० पूर्णिमा वशिष्ठ

Scanned with CamScanner

M.F.A. II Sem
6 May 2020
History of Indain Sculpture
Code No - 2002T

अन्य धातु व्यक्ति मूर्तियां —

यूं तो धातु मूर्तियां प्राचीन काल से बनती चली आ रही है किन्तु जब मूर्तिकला का जोर दक्षिण में हुआ तो मूर्तियां बनाने वालों ने धातु की उत्कृष्ट व्यक्ति मूर्तियों का भी निर्माण किया चोल वंशीय राजाओं ने अपनी रानियों, शैव व वैष्णव सन्तों दाताओं, उनके भक्तों सम्भ्रान्त परिवार के लोगों और मन्दिरों को बनवाने वाले सेठों के अनेक व्यक्ति चित्र मिलते है। उदाहरण के लिए बृहदीश्वर मन्दिर में चोलवंशीय राजा 'राजराजा प्रथम की खड़ी प्रतिमा ; बेलूर के केशव मन्दिर में राजा "विष्णुवर्धन की प्रतिमा" तिरुपति के निकट तिरुमलाई की पहाड़ी पर स्थित श्री निवास पेरुमल मंदिर में विजयनगर के सबसे प्रसिद्ध प्रतापी 'राज कृष्णदेव राय' और उनकी दोनो रानियां चिन्ना देवी, तिरुमाला देवी की धातु की प्रतिमा बनी। विजयनगर के राजाओं ने धातु प्रतिमा बनवाने में बड़ी सहायता की और मूर्ति बनाने वालों का सम्मान किया

दीपदान परम्परा द० भारत में धातु मूर्तिकला के उत्कृष्ट उदाहरणों में दीपनिर्माण कला को माना जा सकता है। इन दीपकों को मन्दिरों एवं घरों में उत्सवों या त्योहारों के समय प्रयोग में लिया जाता है। दीपक चोलवंशीय कला के नमूने है। जो शास्त्रीय नियमों के आधार पर स्थपतियों द्वारा निर्मित किये गये। ये दीपक विभिन्न आकारों में बनाये गये। किन्तु सबसे लोकप्रिय दीप लक्ष्मी दीपम होते। जिससे स्त्री की आकृति स्तम्भ भाग के साथ हाथ में तेल व बत्ती का वर्तन लिए दर्शित होती है। ये दीप पीतल व तांबे दोनो धातुओं में बनाये जाते है।

16 वी 17 वीं शताब्दी में निर्मित दीप लक्ष्मी (दीपम्) की पीतल की प्रतिमा एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इस प्रकार दक्षिण भारत में चोल राजाओं के संरक्षण में धातु मूर्तिशिल्प कला अपने चर्मोत्कर्ष पर पहुंची। इस समय की शैव धर्म में संबंधित कांसे की मूर्तियों के साथ-साथ वैष्णव धर्म से सम्बन्धित मूर्तियां भी बहुतायत से प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner